PANDIT SHRI LAXMAN BHATT TAILANG (POSTHUMOUS)

Pandit Shri Laxman Bhatt Tailang was a legendary senior exponent of the old pure Indian classical music form 'Dhruvpad'.

2. Born on 24th December, 1928, Pandit Bhatt qualified his master's diploma with gold medal and special vazeefa from Sindhiya Raj Parivar from reputed institution 'Madhav Sangeet Mahavidyalaya', Gwalior in 1950-51. He inherited this art from his illustrious musical family of dedicated musicians and carried this towards perfection by learning under some of the Legendary maestros of Gwalior and Dagar Gharana. His grandfather late Pt. Gopal Chandra Ji and father late Pt. Gokul Chandra Ji Bhatt were singers of the temple Haveli sangeet. Later on he went for deep and intensive training of Khayal and Dhruvpad under legendary gurus Pt. Raja Bhaiya *Pooch Wale* and others of Gwalior Gharana and Dhruvpad in institution 'Shriram Bharteey Kala Kendra', Delhi through scholarship from government under guidance of renowned gurus late Ustad Nasir Moinuddin and late ustad Nasir Ameenuddin Khan Dagar, where he also learnt Pakhavaj, Rudra Veena and other instruments from legendary gurus late ustad Hafiz Ali Khan and late Pt Purushottam Das.

3. Pandit Bhatt worked very hard for his musical life and got mastery in almost every field of music such as singer, composer, writer, teacher, organiser, instrumentalist, director, innovator and creator. He worked as founder Chairman of two Institutions established by himself 'Rasmanjari Sangeetopasna Kendra' and 'International Dhruvpad Dham Trust', which organised more than 100 Dhruvpad training workshops in India and abroad and 29 national and international Dhruvpad festivals. He dedicated his whole life for preservation and propagation of Dhruvpad especially in Rajasthan. Pandit Bhatt has contributed 80 years of his life performing in international and national festivals, seminars, lecture - demonstrations and teaching workshops etc. Pandit Bhatt's many innovative new creations inspired the next generation. He introduced and disclosed some new dimensions in teaching methods and other practical aspects to make old Dhruvpad tradition alongwith whole classical music more impressive and acceptable for new comer practitioners. He imagined some new ragas like Audav Kalyanam. Kedar Kalyanam, Mewada Darbari, his own style of Jogeshwari and *Joun Todi* etc and Tal Addha *Choutal* also. His two creations named 'Pachrang' and 'Satrang Indrdhanush' using in series wise five or seven singing forms of classical, semi classical, light and folk music in same raga at a same time in same performance. Probably he is the first composer in his generation in Dhruvpad, who used more than two hundred poetries of self written and other popular, unpopular and rare poets and published in his three books Rasmanjari Shatak, Sangeet Rasmanjari and Panchashika Sangeet Vimal Manjari, published by national reputed publishers. He also introduced some new contemporary subjects like 'Sare Jahan Se Achcha' etc. in his compositions.

4. Pandit Bhatt was honoured Top grade by the Directorate of Akashwani (Prasar Bharti), Delhi. He received many reputed national awards and titles for his life time contributions like Rajasthan Sangeet Natak Akedemi Award, two times Tulsi Puraskar, Swati Tirunnal award, Kala Guru and Shreshth Acharya Samman, Maharana Mewad Foundation Dagar Gharana award by Udaipur Maharana, Jaipur Maharaja Sawai Ishvari Singh awards, Sangeet Varidhi and Sangeet Kaustubh title etc.

5. Shri Laxman Bhatt Tailang passed away on 10th February, 2024.

पंडित श्री लक्ष्मण भट्ट तैलंग (मरणोपरांत)

पंडित श्री लक्ष्मण भट्ट तैलंग प्राचीन विशुद्ध भारतीय शास्त्रीय संगीत शैली 'ध्रुवपद' के एक सुप्रसिद्ध और वरिष्ठ गायक थे।

2. 24 दिसंबर, 1928 को जन्मे, पंडित भट्ट ने 1950–51 में ग्वालियर के प्रतिष्ठित संस्थान 'माधव संगीत महाविद्यालय' से सिंधिया राज परिवार की ओर से स्वर्ण पदक और विशेष वज़ीफ़े के साथ मास्टर डिप्लोमा प्राप्त किया। उन्हें यह कला संगीत के प्रति समर्पित अपने प्रतिष्ठित संगीत परिवार से विरासत में मिली और उन्होंने ग्वालियर और डागर घराने के कुछ प्रसिद्ध उस्तादों से सीखकर इसे और श्रेष्ठ बनाया। उनके दादा स्वर्गीय पं. गोपाल चन्द्र जी और पिता स्वर्गीय पं. गोकुल चंद्र जी भट्ट मंदिर हवेली संगीत के गायक थे। बाद में उन्होंने प्रसिद्ध कलाकार पंडित राजा भैया पूछ वाले और ग्वालियर घराने और ध्रुवपद के अन्य कलाकारों के अधीन ख़याल और ध्रुवपद तथा सरकारी छात्रवृत्ति के माध्यम से दिल्ली के 'श्रीराम भारतीय कला केंद्र' संस्थान में प्रसिद्ध गुरु स्वर्गीय उस्ताद नासिर मोइनुद्दीन और स्वर्गीय उस्ताद नासिर अमीनुद्दीन खान डागर के मार्गदर्शन में ध्रुवपद का गहन प्रशिक्षण प्राप्त किया। इस संस्थान में, उन्होंने महान गुरु स्वर्गीय उस्ताद हाफ़िज़ अली खान और स्वर्गीय पंडित पुरुषोत्तम दास से पखावज, रुद्र वीणा और अन्य वाद्ययंत्र भी सीखे।

3. पंडित भट्ट ने अपने संगीत जीवन के लिए कठोर परिश्रम किया और संगीत के लगभग हर क्षेत्र में गायक, संगीतकार, लेखक, शिक्षक, आयोजक, वादक, निर्देशक, नवप्रवर्तक और निर्माता के रूप में महारत हासिल की। उन्होंने स्वयं द्वारा स्थापित दो संस्थानों 'रसमंजरी संगीतोपासना केंद्र' और 'अंतरराष्ट्रीय ध्रुवपद धाम ट्रस्ट' के संस्थापक अध्यक्ष के रूप में काम किया। इन दोनों संस्थानों ने भारत और विदेशों में 100 से अधिक ध्रुवपद प्रशिक्षण कार्यशालाएं और 29 राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय ध्रुवपद उत्सवों का आयोजन किया। उन्होंने अपना पूरा जीवन विशेषकर राजस्थान में ध्रुवपद के संरक्षण और प्रचार–प्रसार के लिए समर्पित कर दिया। पंडित भट्ट ने अपने जीवन के 80 वर्ष अंतरराष्ट्रीय और राष्ट्रीय उत्सवों में प्रस्तुतियों, सेमिनारों, व्याख्यान–प्रदर्शनों और शिक्षण कार्यशालाओं आदि सभी क्षेत्रों में योगदान दिया। पंडित भट्ट की कई नवीन रचनाओं ने अगली पीढ़ी को प्रेरित किया। उन्होंने पुरानी ध्रुवपद परंपरा के साथ–साथ संपूर्ण शास्त्रीय संगीत को नए विद्यार्थियों के लिए अधिक प्रभावशाली और स्वीकार्य बनाने के लिए शिक्षण विधियों और अन्य व्यावहारिक पहलुओं में कुछ नए आयामों का सूत्रपात किया और उन पर गहरा प्रकाश डाला। उन्होंने औडव कल्याणम् केदार कल्याणम, मेवाड़ा दरबारी, अपनी शैली में जोगेश्वरी और जौन तोड़ी आदि जैसे कुछ नये रागों और ताल अद्धा चौताल की भी संकल्पना प्रस्तुत की। 'पचरंग' और 'सतरंग इंद्रधनुष' नामक उनकी दो रचनाओं में एक ही प्रस्तुति के अंतर्गत एक ही समय में एक ही राग में शास्त्रीय, अर्धशास्त्रीय, सुगम और लोक संगीत के पांच या सात गायन रूपों का शृंखलाबद्ध प्रयोग किया गया। संभवतः वह ध्रुवपद में अपनी पीढ़ी के पहले संगीतकार हैं, जिन्होंने स्वलिखित और अन्य लोकप्रिय, अलोकप्रिय और दुर्लभ कवियों की दो सौ से अधिक कविताएं प्रयोग कीं और इन्हें राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित अपनी तीन पुस्तकों रसमंजरी शतक, संगीत रसमंजरी और पंचाशिका संगीत विमल मंजरी में शामिल किया। उन्होंने अपनी संगीत रचनाओं में कुछ नए समसामयिक विषयों जैसे 'सारे जहां से अच्छा' आदि को भी शामिल किया।

4. पंडित भट्ट को आकाशवाणी निदेशालय (प्रसार भारती), दिल्ली द्वारा टॉप ग्रेड से सम्मानित किया गया। उन्हें आजीवन योगदान के लिए कई प्रतिष्ठित राष्ट्रीय पुरस्कार और उपाधियाँ मिलीं, जैसे राजस्थान संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार, दो बार तुलसी पुरस्कार, स्वाति तिरुन्नल पुरस्कार, कला गुरु और श्रेष्ठ आचार्य सम्मान, उदयपुर महाराणा द्वारा महाराणा मेवाड़ फाउंडेशन डागर घराना पुरस्कार, जयपुर महाराजा सवाई ईश्वरी सिंह पुरस्कार, संगीत वारिधि और संगीत कौस्तुभ उपाधि आदि।

5. श्री लक्ष्मण भट्ट तैलंग का 10 फरवरी, 2024 को निधन हो गया।